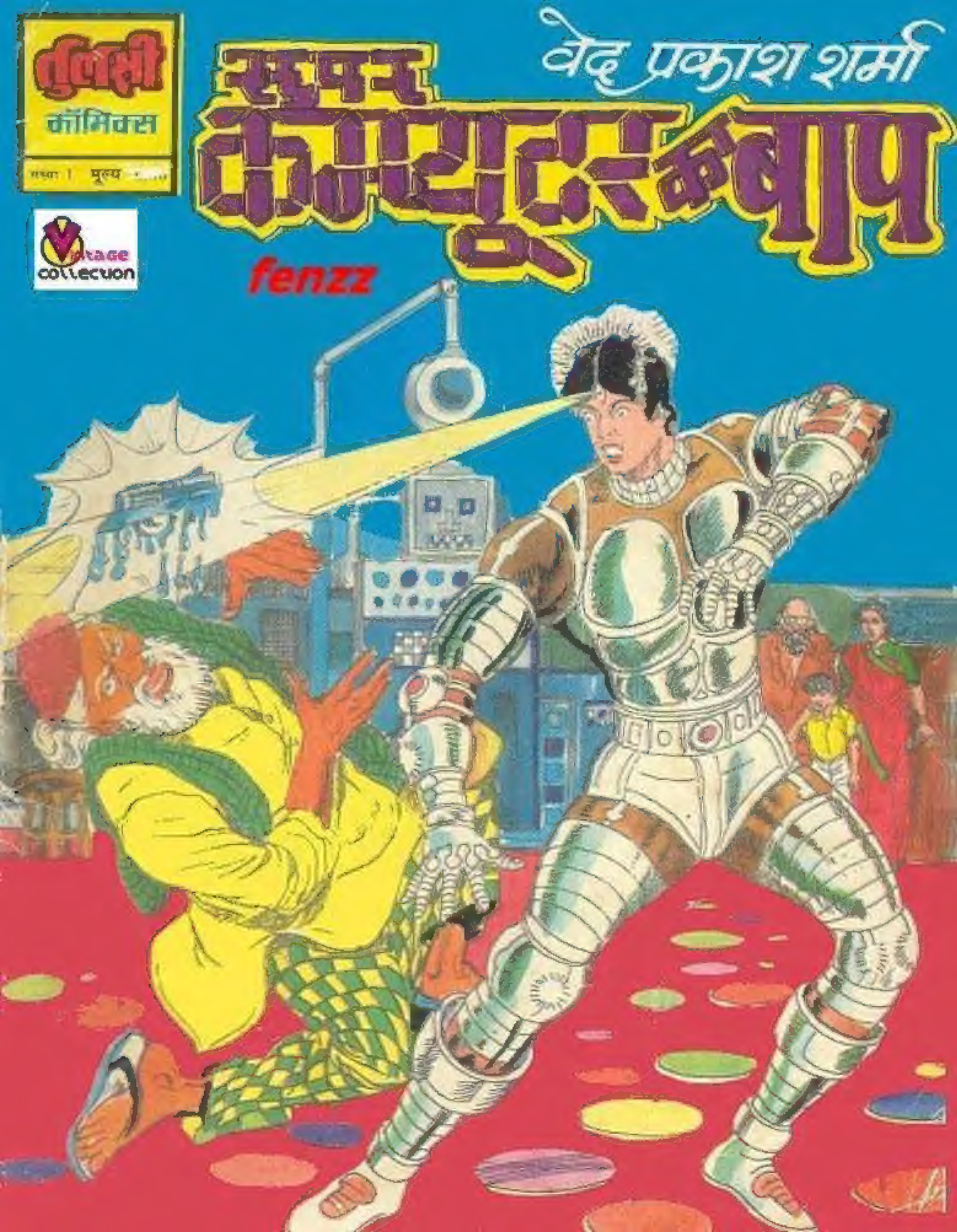

तुलसी
कॉमिक्स
सुपर कम्प्यूटर का बाप
वेद प्रकाश शर्मा
Vintage collection
fenzz

वेद प्रकाश शर्मा

प्रस्तुत कॉमिक वेदप्रकाश शर्मा ने लिखा है। कॉमिक्स की दुनिया में वेदप्रकाश शर्मा का नाम भले ही नया हो परन्तु उपन्यासों की की दुनिया में इस नाम ने कामयाबी के ऐसे झंडे गाड़ रखे हैं जैसे पहले कभी किसी उपन्यासकार ने नहीं गाड़े थे। वेदप्रकाश शर्मा १२५ उपन्यास लिख चुके हैं आज ये हिन्दी के सबसे ज्यादा बिकने वाले एक मात्र लेखक हैं।

वेदप्रकाश शर्मा का जन्म १० जून १९५५ के सूर्योदय के साथ बुलन्दशहर जिले के 'बीहरा' नामक गांव में, एक निर्धन परिवार में हुआ। उस वक्त वेदप्रकाश शर्मा की आयु लगभग दो महीने की थी जब माता- पिता इन्हें लेकर मेरठ आ गये और यहां बस गये। सम्पूर्ण बाल्यकाल मेरठ में ही गुजरा, शिक्षा-दीक्षा भी यहीं हुई। इनके उपन्यासकार बनने के पीछे इनकी मां के कठोर परिश्रम एवं अद्भुत साहस तथा त्याग की दर्द भरी कहानी छुपी है।

उस वक्त इनकी आयु केवल सत्रह वर्ष थी और ये दसवीं कक्षा के छात्र थे जब इन्होंने लेखन क्षेत्र में कदम रखा। उपन्यास लेखन और शिक्षा साथ- साथ चलती रही, बी.ए. तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद ये पूर्णतयः लेखन क्षेत्र के लिए समर्पित हो चुके थे। इनके 'बहू मांगे इंसाफ' नामक उपन्यास पर बनी फिल्म 'बहू की आवाज' रिलीज हो चुकी है। 'कानून का बेटा' नामक उपन्यास पर 'केशव पंडित' नाम की फिल्म बन रही है। 'विधवा का पति' और 'शीशे की अयोध्या' नामक उपन्यासों पर टी.वी. फिल्में बन रही हैं।

नन्हे पाठकों के स्वस्थ मनोरंजन हेतु अब इन्होंने कॉमिक्स की दुनिया में कदम रखा है। कॉमिक्स की दुनिया में वेदप्रकाश शर्मा जिस नये किरदार को लेकर आये हैं उसका नाम है- जम्बू। प्रस्तुत कॉमिक को पढ़ें और हमें अपनी राय लिखें ताकि हम वेदप्रकाश शर्मा को बता सकें कि बच्चों ने उनके जम्बू को पसन्द किया है या नहीं?

— प्रकाशक

प्रकाशकः तुलसी पॉकेट बुक्स, देहली रोड, मेरठ-२

सम्पादकः प्रमिला जैन। सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

© सर्वाधिकार सुरक्षित : **तुलसी पॉकेट बुक्स**, देहली रोड, मेरठ-250 002, फोन नं० : 512005, 512531

सुपर कम्प्यूटर का बाप
लेखक: वेद प्रकाश शर्मा
चित्रांकन: ज्योत्सना जयसवाल
संपादक: प्रमिला जैन
अरे वेद! तुम यहां... मेरे घर!
हां प्रकाश, आज बचपन के दोस्त की याद आ ही गई।
तुम जानते हो कि मैं उपन्यासकार बन गया हूं।
मैं क्या सारी दुनिया जानती है कि वेद प्रकाश शर्मा आज सबसे ज्यादा बिकने वाले उपन्यासकार हैं।
मगर मैं एक मुश्किल में फंस गया हूं।
कैसी मुश्किल?
fenzz

मेरी दो बड़ी बेटियों के नाम हैं कविता और सविता।
मैं जानता हूं।
ये कहती हैं कि छोटे बच्चे उपन्यास तो पढ़ नहीं सकते, कॉमिक्स पढ़ते हैं, अतः आपको कॉमिक्स लिखने चाहियें।
ठीक तो कहती हैं ये, इसमें नुकसान क्या है?
मैं विज्ञान पर कॉमिक्स लिखना चाहता हूं और तुम जानते हो कि विज्ञान के मामले में निल बटा सिफर हूं। जबकि तुम आज देश के बहुत बड़े वैज्ञानिक हो।
तो तो है मगर तुम मुझसे चाहते क्या हो?
विज्ञान से सम्बन्धित कोई रोचक कहानी सुनाओ।
ओह! अब तुम्हारी चालाकी समझ में आई। कहानी मुझसे सुनोगे और उस पर कॉमिक्स बनाओगे अपने नाम से।
तुम्हारा नाम भी दे दूंगा। मगर कहानी तो सुनाओ।
कहानी तो नहीं। मगर मैं तुम्हें एक सच्ची घटना सुना सकता हूं।
सच्ची घटना?
हां, तुमने अखबारों में पढ़ा होगा। डॉक्टर आनंद ने तीन साल के परिश्रम के बाद एक बहुत ही चमत्कारी आविष्कार किया था।

क्या तुम जम्बू की बात तो नहीं कर रहे हो?
बिल्कुल ठीक समझे, मैं तुम्हें जम्बू के बारे में ही बताना चाहता हूं।
जरूर बताओ, जम्बू के बारे में तो मैं भी जानने को उत्सुक हूं और बच्चे तो जम्बू की कहानी सुनने के बाद बाकी सबकी कहानियां भूल जाएंगे।
तो सुनो... डॉक्टर एच. जी. भाभा मेरे वैज्ञानिक गुरु थे। कुछ दिनों पहले की बात है। उनके घर में उनकी पत्नि सुषमा और बेटा ऐसी बातें कर रहे थे...!
प्रयोग शाला
पापा कहाँ हैं मम्मी?
हमेशा की तरह वहीं हैं बेटी, तेरे पापा प्रयोग-शाला में हैं।
मगर वह दरवाजा कभी खुलता क्यों नहीं, पापा बाहर क्यों नहीं आते?
वो काम कर रहे हैं बेटा, काम खतम हो जायेगा तो...
अपने आपको कब तक धोखा देती रहोगी मालकिन?
क्या मतलब रहीम?
मालिक को प्रयोगशाला में गए तीन साल गुजर गए। तब से आज तक इसका दरवाजा एक सेकिंड के लिये भी नहीं खुला।
प्रयोग शाला
क्या तुम्हें याद नहीं सुषमा, तीन साल पहले क्या हुआ था?

मुझे याद है मालकिन! कुछ का वक्त था, मालिक अखबार पढ़ रहे थे...!
नहीं... नहीं... ऐसा नहीं हो सकता।
क-क्या हुआ आपको?
ये ग्यानियों का अपमान है! भारत की बेइज्जती है! मैं ऐसा नहीं होने दूंगा...!
???
हुआ क्या है मालिक?
मैं कसम खाता हूं! अमेरिका सहित सारी दुनिया को भारत के कदमों में लाकर डाल दूंगा।
आप बताते क्यों नहीं, आखिर बात क्या है?
प्रयोगशाल
मैं प्रयोगशाला में जा रहा हूं सुषमा, अब केवल तभी बाहर निकलूंगा जब ऐसा कुछ कर लूंगा जिसे देखकर सारी दुनिया भारत के सामने नतमस्तक हो जाए।

तुम मुझे डिस्टर्ब नहीं करोगी सुषमा। मुझे मरने की फुरसत है। जब आना होगा खुद बाहर आऊँगा।
स-सुनिये!
भड़ाक
तीन साल पुराना अखबार आज भी मेरे पास है। हजार बार पढ़ चुकी हूँ। परन्तु न जाने क्यों कि कौन सी खबर पढ़कर उन्हें क्या हुआ था?
हुजूर मालकिन, मैंने कई बार प्रयोगशाला की बंद खिड़की से कान लगाकर सुनने की कोशिश की, हर बार मुझे मालिक के अलावा भी एक और आवाज सुनाई दी।
क्या कहना चाहते हो?
प्रयोगशाला में मालिक के साथ कोई है, मालिक उससे अजीब-अजीब बातें करते हैं।
तभी...
म-मालिक...?
??

मेरा बेटा!
अभी मैं किसी को कुछ बताना नहीं चाहता।
अपनी पत्नि को भी नहीं?
तुम जाओ रहीम।
जो हुक्म मालिक!
आओ मुकुल, मैं तुम्हें तुम्हारे एक और बेटे से मिलाता हूँ।
एक और बेटे से?
प्रयोगश

जम्बू ने अपने लाल वस्त्र उतार दिये।
???

देख क्या रहे हो तमगू, ये तुम्हारी माँ है।
तमगू ने भावपूर्वक सुषमा के पैर छुए। सुषमा के आश्चर्य की सीमा न रही।
मुझे आशीर्वाद दीजिये माँजी!
अपने बेटे को आशीर्वाद नहीं देगी सुषमा?
न-नहीं...नहीं!
जब तक आप आशीर्वाद नहीं देंगी, तब तक मैं आपके पैर नहीं छोड़ूंगा माँजी!
ज...जीते रहो... जीते रहो!
ये बंटी है तमगू, तुम्हारा भाई!
हैलो बंटी!

जम्बू मेरी तीन साल की मेहनत का परिणाम है मुन्ना।
अरे...अरे... कहाँ चले जम्बू, रुको।

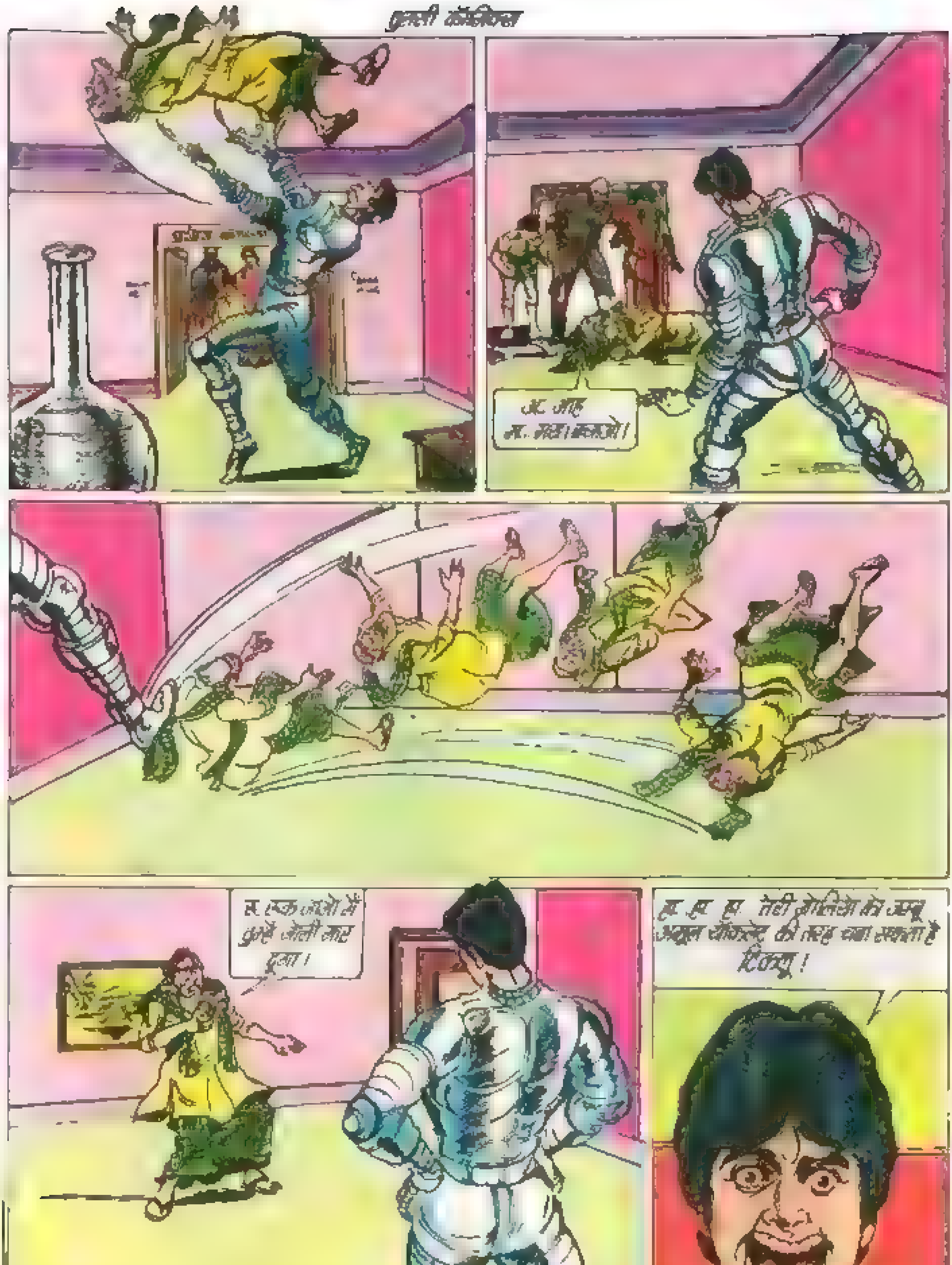
अ..आह
भ..भाग! बचाओ!
न..रुक जाओ मैं तुम्हें गोली मार दूंगा!
हा..हा..हा.. तेरी गोलियों से जम्बू अतुल शक्ति की तरह बचा सकता है टिल्लू!

धांय

धाँय धाँय
प्रयोग शाला

रिवॉल्वर मोम की तरह पिघल गया।
ओह
ढिशुम

इसका मर जाना ही ठीक है बाबा जी!
क्यों?
ज.. जासूस...

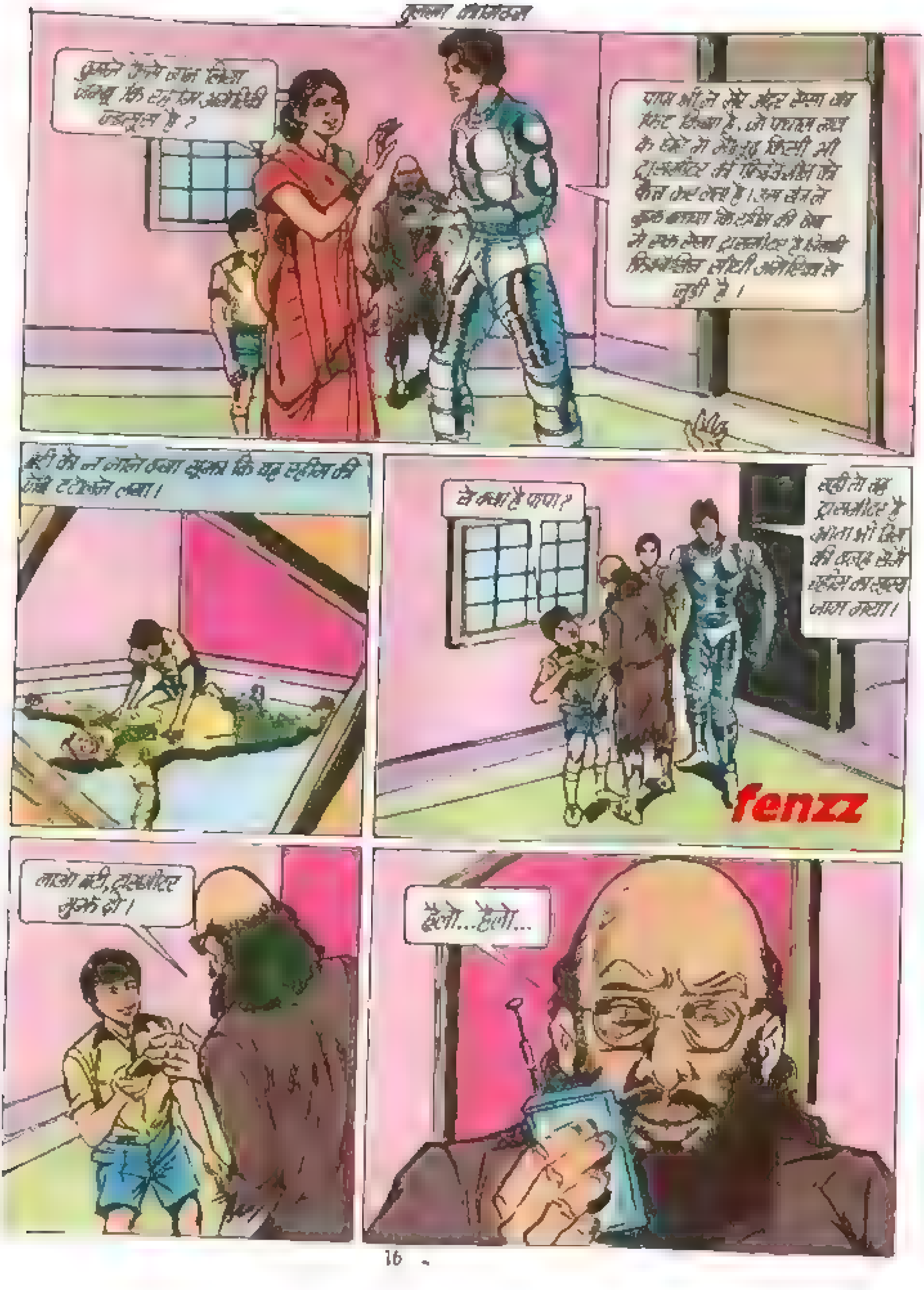
ये क्या है पापा?
लाओ बेटी, ट्रांसमीटर मुझे दो।
हैलो...हैलो...

मैं भारत से डॉक्टर भाभा बोल रहा हूँ, हरामजादे!
क-क्या? डॉक्टर भाभा?
ओह!
कैसा अपमान?
यह मेरे देश का अपमान नहीं तो और क्या था?

बको
हेलो?

कैसे?
भारत में –
ओ के. थैंक्यू!

ठीक है, मैं संदूक पर बैठ जाता हूं।

एक बात बताओ पापा!
पूछो बेटे!
मैं बताता हूं बेटा!

लेकिन...?
मैं चाहता हूं कि जम्बू आदमी की तरह सोच सके, कल्पना कर सके और उन सवालों के भी जवाब दे सके, जिनके जवाब इसमें नहीं भरे गए हैं। अभी तक जितने रोबोट्स बने हैं वे सब एक मशीन होते हैं जबकि मैं चाहता हूं कि हमारा जम्बू केवल मशीन बनकर न रहे। इंसान की तरह दुःख दर्द और खुशी भी महसूस कर सके।
ऐसा कैसे हो सकता है पापा!
अभी तक कोई तरकीब दिमाग में नहीं आई है मगर मैं निराश नहीं हूं बेटे, एक न एक दिन मैं अपने अंतिम लक्ष्य में भी कामयाब हो जाऊंगा।
म..मगर..!
बहुत रात हो गई है बेटे! मम्मी के पास जाकर सो जाओ।
ओ.के. पापा! बाय जम्बू!
अब तुम बताओ जम्बू कि तीन महीने तक भारत में मौसम कैसा रहेगा?
तीन महीने बाद आन्ध्रप्रदेश में बहुत जबरदस्त तूफान आयेगा पापाजी। मगर उससे... मगर...मगर..

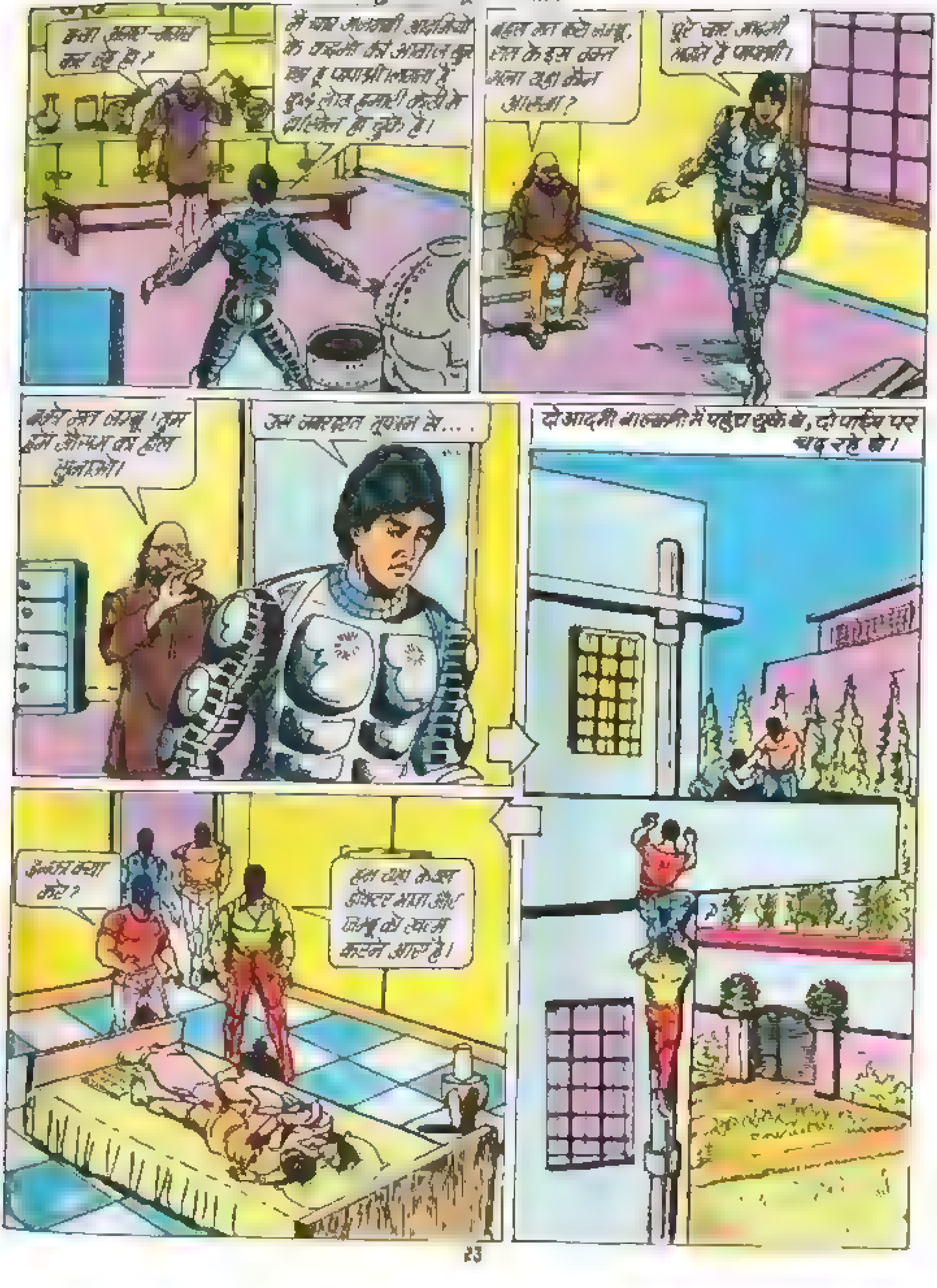
पूरे चार आदमी आते हैं पापाजी।
उस जबरदस्त तूफान से....
दो आदमी बालकनी में पहुंच चुके हैं, दो पाईप पर चढ़ रहे हैं।

वही ठीक होगा।
कौन लोग?
ब..बचो पापाजी।

आह...!
आह
प...पापाजी!
आह आह
कमीनो... कुत्तो.. तुमने मेरे पापाजी को..

प-पापाजी...
पापाजी!
न-नहीं...नहीं...पापाजी,

मरने वाला तो मैं वैसे भी हूं जम्बू, अगर तुम्हारे ऑपरेशन करने से पहले मर गया तो मेरा दिमाग मर जायेगा और न तुम्हारे किसी काम का रहेगा, अतः जल्दी करो, मैं मर रहा हूं मगर ऑपरेशन के बाद मेरा दिमाग तुम्हारे जिस्म में जिंदा रहेगा।
म-मगर मुझे ऑपरेशन करना कहां आता है पापा जी?
मैं बताता हूं। सबसे पहले क्लोरोफार्म सुंघाकर मुझे बेहोश करो। उसके बाद आरी से मेरा सिर काटो। दिमाग निकालो। ध्यान रहे, दिमाग की बारीक नसों को छोटी कैंची से काटना। फिर दिमाग को अपनी खोपड़ी में रखना और लाकर उस मशीन वाली मशीन में जोड़ देना। मशीन के अंदर जाल बना है उसे हटा देना...
...वह मशीन मेरे दिमाग की नसों को खुद तुम्हारी खोपड़ी में लगे तारों से जोड़ देगी।
पापाजी...!
जल्दी करो जम्बू, मुझे बेहोश कर दो।
? ? ? ?

मुझे माफ करना पापा जी!

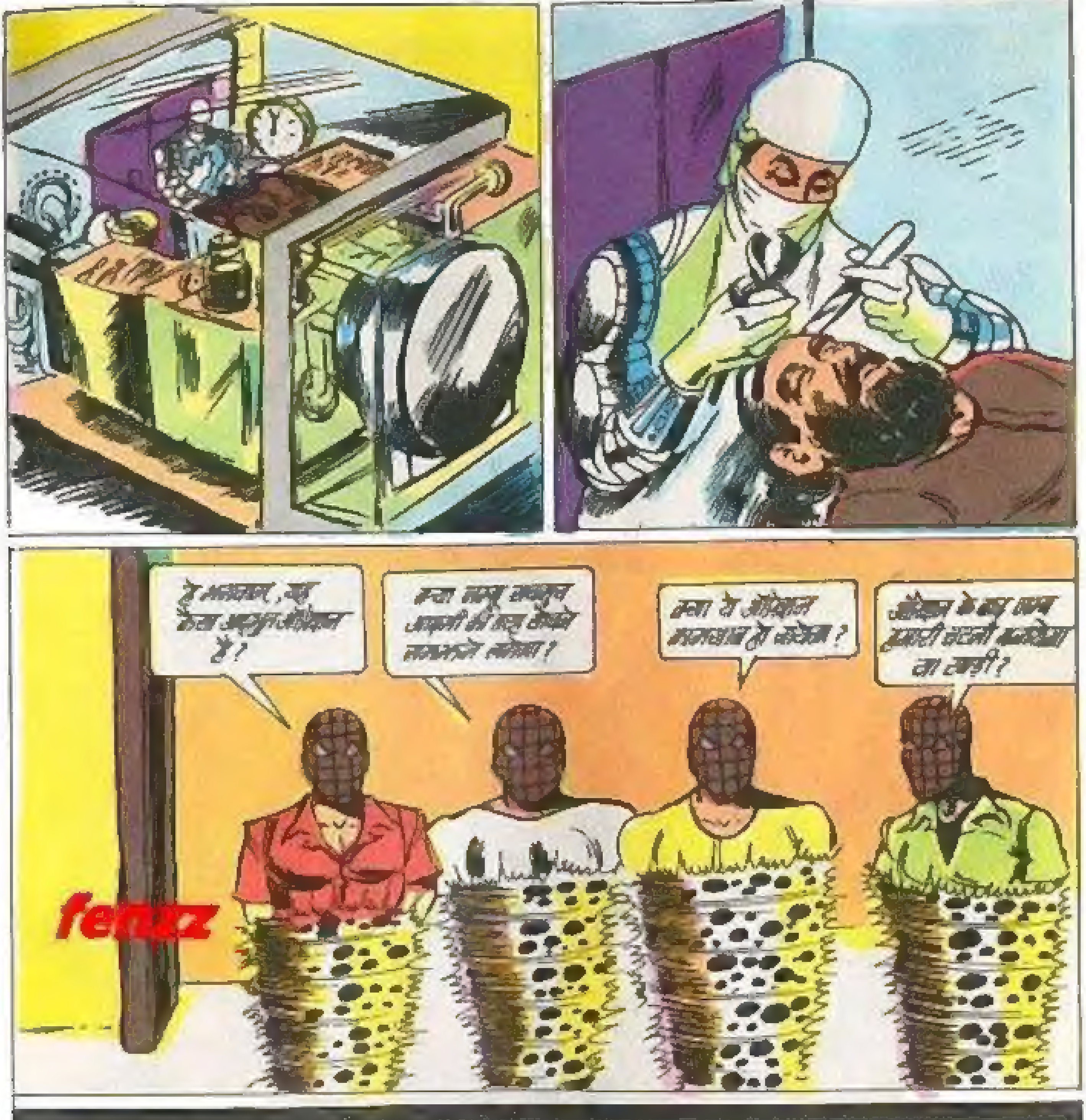

इससे आगे का हाल जानने के लिए पढ़ें —

तुलसी कॉमिक्स

के अगले सैट मे

वेद प्रकाश शर्मा का नया कॉमिक

जम्बू बना भावा

fenzz